B-III
L-06
MIH

आंग्ल मैसूर युद्ध

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध -1780 - 84 :-

- हैदर एवं कम्पनी की महत्वांकांक्षा द्वितीय युद्ध का करण बनी।
- प्रारम्भ में मराठे एवं निजाम हैदर के साथ थे, आगे चलकर अंग्रेजों का साथ दिया।
- 1782 में हैदर की मृत्यु के पश्चात टीपू सुल्तान ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- 1784 में मंग्लौर की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ दोनों ने एक दूसरे के विजित क्षेत्रों को लौटाया।

KCS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

टीपू सुल्तान अंग्रेजों का खतरनाक शत्रु :-

आर्थिक क्षेत्र में :-

- टीपू इस तथ्य को भलीभाँति जानता था कि किसी भी राज्य की सैनिक स्थिति उसकी आर्थिक क्षमता पर निर्भर करती है।
- राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने के लिए टीपू ने कई कदम उठाऐं-

• भू-राजस्व वसूली की प्रक्रिया से मध्यस्थों को हटाया और भू-राजस्व में वृद्धि की।

• व्यापार के विकास के लिए व्यापार बोर्ड बनाया और कई देशों में व्यापारिक प्रतिनिधियों को नियुक्त किया।

• मसालों के व्यापार पर राज्य का एकाधिकार स्थापित किया।

• बड़ी संख्या में हथियार एवं अन्य प्रकार के उद्योगों से संबंधित कारखाने भी स्थापित किए गए।

सैनिक क्षेत्र में :-

• यूरोपियन माडल पर सेना का आधुनिकीकरण किया। फ्रांसीसियों से सहयोग लिया लेकिन फ्रांसीसी अधिकारियों पर आंशिक निर्भरता थी।

• टीपू नौ सेना के महत्व को समझता था उसने 22 युद्धपोत के निर्माण की योजना बनाई कुछ डाकयार्ड का निर्माण भी हुआ जैसे-मंगलोर लेकिन संसाधनों की कमी के कारण टीपू को सफलता नहीं मिली।

• ब्रिटिश विरोधी राष्ट्रों से सम्पर्क बनाए रखा जैसे फ्रांस, तुर्की, अफगानिस्तान इत्यादि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

• 1790 के दशक में टीपू ने नेपोलियन से भी पत्राचार किया था। (अंग्रेजों के विरुद्ध)

अन्य क्षेत्र में :-

• टीपू सुल्तान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को एवं यूरोपीय घटनाओं को भी लेकर जागरूक था जैसे- फ्रांसीसी क्रान्ति से संबंधित जैकोबिन पार्टी का सदस्य बना और श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता की याद में वृक्ष लगाया।

• सैनिक, आर्थिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को लेकर जागरूक कोई भी शासक भारत में साम्राज्य विस्तार में अंग्रेजों के लिए चुनौती बन सकता था। यही कारण है कि अंग्रेज टीपू सुल्तान को सर्वाधिक खतरनाक शत्रु मानते थे।

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध :- (1790-92) -

कारण - • कम्पनी की महत्वाकांक्षा।
• टीपू की महत्वाकांक्षा एवं टीपू के कार्य।
• फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण फ्रांस में राजनीतिक अस्थिरता, टीपू एवं फ्रांस के बेहतर संबंध थे अंग्रेजों ने क्रान्ति को भी अवसर के रूप में देखा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

युद्ध से पूर्व मराठें एवं निजाम से अंग्रेजों ने गठबंधन बना लिया था।

<u>परिणाम :-</u>

- टीपू सुल्तान की पराजय, 1792 में श्रीरंगपट्टनम की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ टीपू को एक बड़ी राशी मुआवजे के रूप में अंग्रेजों को देनी पड़ी तथा आधा भू भाग भी अंग्रेजों एवं उसके सहयोगियों को देना पड़ा।

"मैंने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाए बिना शत्रु को कमजोर कर दिया" <u>कार्नवालिस</u> 1786-93

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

<u>चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध - 1799 :-</u>

- मैसूर की पराजय, टीपू की मृत्यु, मैसूर पर अंग्रेजो का नियंत्रण, मैसूर का एक छोटा सा भू-भाग वड्यार वंश के शासक को दिया।
- इस युद्ध में भी प्रारम्भ से अंत तक निजाम और मराठों ने अंग्रेजों का साथ दिया।

वेलेजली एवं साम्राज्य विस्तार (1798-1805)

- वेलेजली जब भारत में गवर्नर जनरल बन कर आया तब उत्तर एवं पूर्वी भारत में अंग्रेज एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में स्थापित हो चुके थे दक्षिण भारत में भी कम्पनी सबसे बड़ी शक्ति थी लेकिन टीपू की समस्या का समाधान पूरी तरह से नही हुआ था।
- मध्य एवं पश्चिम भारत में मराठों की स्थिति अत्यंत मजबूत थी और उत्तर-पश्चिम भारत भी अंग्रेजों के प्रभाव से बाहर था, यूरोप में नेपोलियन भी एक चुनौती के रूप में उभर रहा था और भारत पर उसकी नज़र थी।

वेलेजली के कार्य :-

- युद्ध – 1799 में चतुर्थ मैसूर युद्ध
  1803-05 के बीच द्वितीय मराठा युद्ध

- डेनमार्क एवं नेपोलियन के अच्छे संबंध थे वेलेजली ने भारत में उसके व्यापारिक केन्द्र पर कब्जा किया - ट्रेंकोबार (तमिलनाडु) सेरामपुर (बंगाल)

KGS IAS

• गोवा में पुर्तगालियों से बातचीत कर ब्रिटिश सेना को तैनात किया।

• नेपोलियन से लड़ने के लिए भारत से एक सेना की टुकड़ी मिस्र भेजी गई।

• बड़ी संख्या में भारतीय राज्यों से सहायक सन्धि की – हैदराबाद, मैसूर, तंजौर, अवध, पेशवा, भोंसले, सिंधिया इत्यादि।

सहायक सन्धि

भारत में साम्राज्य विस्तार के क्रम में मुख्यतः अंग्रेजों के द्वारा अपनाई गई नीति, इसके अन्तर्गत भारतीय राज्यों को रक्षा के लिए अंग्रेजों पर निर्भर बनाया जाता था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN

Note :-

भारत में इसे प्रारम्भ करने का श्रेय डुप्ले को दिया जाता है।

• क्लाइव ने सर्वप्रथम अवध के साथ इस प्रकार की सन्धि की।

वेलेजली ने इस सन्धि का सर्वाधिक उपयोग किया। वेलेजली से पूर्व रक्षा के बदले पैसे लेने पर बल होता था।

वेलेजली ने संप्रभुता युक्त भू-भाग को प्राथमिकता दी।

• वेलेजली ने जिन राज्यों से सन्धि की उसमें निम्नलिखित बिन्दुओं को सन्धि में शामिल किया गया —

• रक्षा की जिम्मेदारी कम्पनी पर होगी।

• सन्धि करने वाले राज्यों की विदेश नीति कम्पनी के द्वारा संचालित होगी।

• कम्पनी की अनुमति के बिना सन्धि करने वाले राज्य यूरोपियन या अमेरिकन को सेवा में नहीं रखेंगे।

• सन्धिकर्ता राज्यों में एक ब्रिटिश रेजीडेंट को नियुक्त किया जायेगा।

• कम्पनी को संप्रभुता युक्त भू-भाग दिया जायेगा।

अंग्रेजों की दृष्टिकोण से इसका महत्व —

• रक्षा संबंधी जिम्मेदारी के कारण एक विशाल सेना का गठन, भारतीय राजस्व के द्वारा सेना का गठन, इसी सेना का उपयोग भारत में साम्राज्य की सुरक्षा एवं साम्राज्य के विस्तार के लिए किया गया।

• विदेश नीति का संचालन भी अंग्रेजों के द्वारा किए जाने से सन्धिकर्ता राज्य अंग्रेजों के विरुद्ध कोई गठबंधन नहीं बना सकते थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR ©

यूरोपीयन वाली शर्त ने भारतीय राज्यों को अन्तर्राष्ट्रीय गठबंधन बनाने और मदद लेने से भी रोका गया।
रेजीडेंट के कारण भारतीय राज्यों पर अंग्रेजों की मजबूत पकड़ बनी और रेजीडेंट का अनुभव इन राज्यों को जीतने में उपयोगी साबित हुआ।

- संप्रभुता युक्त भू-भाग के कारण न केवल साम्राज्य का विस्तार हुआ बल्कि अंग्रेजों की आय बढ़ी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR